शोध-चिंतन पत्रिका: विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका
अंक: 8; जनवरी-जून,2024

नव वैष्णव आंदोलन : एकशरण नाम धर्म के विशेष संदर्भ में

डॉ. जशोधरा बोरा

शोध-सार :

एकशरण नाम धर्म एक नव-वैष्णव आंदोलन है जिसे 15-16वीं शताब्दी में पूर्वोत्तर भारत में स्थित असम में श्रीमंत शंकरदेव द्वारा प्रवर्तित किया गया था। इसमें विष्णु के प्रति ध्यान केंद्रीत कर, श्रवण, नाम स्मरण और उनके कर्मों को गाने (कीर्तन) आदि पर बल दिया गया है। एकशरण का प्रचार करने वाली संस्थाएँ जैसे सत्र (मठ), नामघर (प्रार्थना घर) का असम की सामाजिक संरचना के विकास में गहरा प्रभाव है। इस आंदोलन से उत्पन्न कलात्मक रचनाओं ने साहित्य, संगीत (बरगीत), नाटक (अंकिया नाट) और नृत्य (सत्रिया नृत्य) के नए रूपों को जन्म दिया है। यह आंदोलन जाति व्यवस्था और हिंदू धर्म के अन्य सम्प्रदायों, विशेषकर शक्तिवाद में पशु बलि के खिलाफ़ रहा है। अपने समतावाद के लिए प्रसिद्ध इसने ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म के लिये गंभीर चुनैती पेश की और सभी जातियों, जन-जातियों और धर्म के लोगों को अपने में शामिल कर लिया। यद्यपि एकशरण अवैयक्तिक (निर्गुण) भगवान को स्वीकार करता है, तथापि यह वैयक्तिक (सगुण) को पूजनीय के रूप में पहचानता है। एकमात्र पहलू जो वैयक्तिक को अवैयक्तिक से अलग करता है वह सृजन का कार्य है, जिसके द्वारा नारायण ने सब कुछ बनाया है। नारायण को वैयक्तिक और पूजनीय देवता के रूप में एक प्रेमपूर्ण और प्रिय देवता माना जाता है, जिनके पास शुभ गुण हैं जो भक्तों को आकर्षित करते हैं। वह अद्वैत, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है; सभी का निर्माता, पालनकर्ता और संहारक। उनके पास करुणामय (दयालु), दीनबंधु (नीचों का मित्र), भक्त-वत्सल (भक्तों का प्रिय) और पतित-पावन (पापियों का उद्धारक) जैसे नैतिक गुण भी हैं जो उन्हें भक्तों के लिये आकर्षक बनाते हैं। हालांकि यह अन्य देवताओं के अस्तित्व से इंकार नहीं करता है, लेकिन यह दावा करता है कि अकेले नारायाण ही पूजनीय हैं।

बीज-शब्द : *एकशरण नाम धर्म, नव-वैष्णव आंदोलन, श्रीमंत शंकरदेव, नामघर, बरगीत, अंकिया नाट, सत्रिया नृत्य, निर्गुण, सगुण*